"पूर्वरङ्ग पर आधारित प्रयोग एवं सिद्धान्त पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण"

(७ से ९ नवम्बर, २०१२)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं ज्ञान-प्रवाह, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में नागरी नाटक मण्डली, वाराणसी के प्रेक्षागृह में ७ नवम्बर, २०१२ को रात्रि ७ बजे नाट्यशास्त्र और वेद पर आधारित नृत्यनाटिका का भावपूर्ण मंचन हुआ।

पूर्वरङ्ग प्रयोग -

संस्कृत नाट्य की मुख्य प्रस्तुति के पूर्व किया जाने वाला एक भूमिकात्मक अंग है। इसके १९ अंग होते हैं। समय की गति के साथ यह परम्परा लुप्त हो गई परन्तु इसके अंग 'कुडियाट्टम' जैसे संस्कृत नाट्यरूप तथा समूचे देश में फैले 'अंकिया' नाट्य जैसे लोकनाट्यरूपों में अभी भी विद्यमान हैं। इसकी पुष्टपरम्परा दक्षिण के केरल प्रदेश में दृष्टिगत होती है। यह प्रयोग स्व० प्रेमलता शर्मा द्वारा लगभग ३७ वर्ष पूर्व किये गये प्रयोग का पुनर्जीवन्त किया गया रूप था। इसका आरम्भ रंगमंच पर 'कुतप' यानी वादकों एवं गायकों के उपवेशन से होता है। 'पूर्वरङ्ग' में गीतक के साथ नृत्य का सुन्दर समायोजन भी किया गया जिसको एक साथ पिरोने से 'पूर्वरङ्ग' 'चित्रपूर्वरङ्ग' के विशेष नाम से जाना जाता है।

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा के देववंदन प्रस्तुति से संगोष्ठी का श्रीगणेश हुआ। प्रो० युगलकिशोर मिश्र ने अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण किया। मानसिंह तोमर संस्कृत विश्वविद्यालय, ग्वालियर के पूर्व कुलपति डा० चितरंजन ज्योतिषी, वाराणसी विकास प्राधिकरण के सचिव डा० सर्वज्ञराम मिश्र, प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी, डा० भानुशंकर मेहता एवं प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने दीप प्रज्ज्वलित किया तथा साथ ही मुख्य अतिथियों के द्वारा 'नाट्यशास्त्रीय पूर्वरंग' पर आयोजित दो-दिवसीय संगोष्ठी के लिए तैयार पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

ज्ञानप्रवाह की प्रबन्ध-न्यासी विमला पोद्दार ने कलाकारों का सम्मान किया तथा प्रो० कृष्णकान्त शर्मा ने परिकल्पना पर प्रकाश डाला।

'पूर्वरङ्ग' के प्रयोग का आरम्भ नाट्यशास्त्र वर्णित १९ अंगों में से अधिकांश को प्रस्तुत कर किया गया। 'बहिर्जवनिका संस्थ' अंगों में से 'वर्धमान् गीतक' का गायन और उस पर आश्रित नर्तन का पुनराविष्कार महत्त्वपूर्ण था।

पद्मभूषण प्रो० सी० वी० चन्द्रशखर एवं जया चन्द्रशेखर के निर्देशन में आठ कलाकारों ने 'पूर्वरङ्ग' की नाट्यशास्त्रानुसार प्रस्तुति दी। भरतनाट्यम के माध्यम से विलुप्त हो रही 'पूर्वरङ्ग' की परम्परा को मोहक नर्तन भावभंगिमाओं से प्रदर्शित किया गया। कलाकारों ने दशों दिशाओं के देवताओं का आवाहन, अभिनंदन, मंगलश्लोक आदि गायन की प्रस्तुति की। संस्कृत भाषा के

हास्य, व्यंग्य, संवादों की प्रस्तुति अनुपम थी। इस प्रकार 'प्ररोचना' पर्यन्त 'पूर्वरङ्ग' को प्रस्तुत किया गया।

इस नृत्यनाटिका की प्रस्तुति में विभिन्न कलाकारां में पद्मभूषण प्रो० सी०वी० चन्द्रशेखर, श्रीमती जयाचन्द्रशेखर, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, श्रीमती स्वरवन्दना शर्मा, डा० लयलीना भट्ट तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संगीत विभाग की छात्राएं सम्मिलित थीं।

इसी क्रम में श्रीमती मंजरी के निर्देशन में कलाकारां ने ऋग्वेद के 'उषस्' सूक्त पर आधारित भरतनाट्यम शैली में नृत्यनाटिका की प्रस्तुति की जिसमें वैदिक निशा, उषा और सूर्य को एक सामान्य झाड़ी के कथन के रूपक पर आश्रित कर अत्यन्त भावनिर्मित तथा सूक्ष्म अभिनय द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

'उषस्' --

यह ऋग्वेद के 'उषस्' सूक्त पर आधारित है। 'उषस्' प्रकृति का वह पक्ष है जिसकी अधिष्ठात्री देवता को वैदिक कवियों ने नारी के रूप में चित्रित किया है। सामान्यत: प्रकाश को 'आत्मा' के स्वरूप में देखा गया है। इसलिए 'उषस्' मात्र प्रकाश का रूपक न होकर वह अपनी और अमूर्त्त आयाम में मनुष्य की आत्मा की अमूर्त्त आकांक्षाओं को भी निरूपित करती है।

'उषस्' के प्रमुख कलाकारों में श्रीमती मंजरी के साथ सुश्री राजमल्ली बालकृष्णन्, ज्योतिष्मती शीजिथ कृष्णा, श्रीमती साईकृपा प्रसन्ना, एस०रामराजन एवं इश्वर रामकृष्णन आदि सम्मिलित थे।

कलाकारों द्वारा इस प्रकार की नृत्यनाटिका की प्रस्तुति के साथ उत्कृष्ट भावभंगिमाओं से 'पूर्वरङ्ग' और 'उषस्' सजीव हो उठी। ये दोनों ही प्रस्तुतियाँ संस्कृत नाट्य के दो विशिष्ट पक्षों को उजागर कर रही थीं।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापन प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी के द्वारा गिया गया।

'पूर्वरङ्ग' पर आयोजित दो-दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ दिनांक ८ नवम्बर, २०१२ को सामने घाट स्थित ज्ञान प्रवाह में डा० गगन चट्टोपाध्याय के सामगान एवं डा० स्वरवन्दना शर्मा के सांस्कृतिक मंगलाचरण से हुआ। अतिथियों द्वारा गंगाकलश पूजन तथा प्रो० युगलकिशोर मिश्र द्वारा अतिथियों के प्रति स्वागतभाषण एवं स्वागताभिनन्दन किया गया। प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने दुकूल भेंट कर अतिथियों का अभिनन्दन किया। श्रीमती विमला पोद्दार ने अतिथियों के प्रति सम्मानजनक भाषण दिया।

प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने नाट्यशास्त्र पर अनुसंधान और पूर्वरंग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भरत के नाट्यशास्त्र एवं विशेष रूप से 'पूर्वरङ्ग' को दृष्टि में रखकर आयोजित यह संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अध्यक्षीय भाषण प्रो० एन० रामनाथन ने दिया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० सी० वी० चन्द्रशेखर थे। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के

कलाकोश विभाग के अध्यक्ष डा० एन० डी० शर्मा ने भी इस संगोष्ठी में अपने उद्गार व्यक्त किये तथा धन्यवाद ज्ञापन कलाकोश विभाग के पूर्व अध्यक्ष डा० विजयशंकर शुक्ल ने किया।

१५ मिनट के लघु चाय हेतु अवकाश के पश्चात् प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने की। वक्ता पक्ष से प्रो० युगलकिशोर मिश्र ने "नाट्यशास्त्रोपदिष्ट 'गान' विधाओं का वैदिक आधार (पूर्वरंग के विशेष सन्दर्भ में)" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि संस्कृत और पारंपरिक नाट्यशैलियों का उद्भव वेदों में निहित है। प्राचीन संगीत का मूल भी सामवेद में दिखायी पड़ता है। इसी परम्परा का रूप 'गान्धर्व' और 'गान' की दोनों शैलियों में है। पूर्वरंग का मूल स्रोत सामवेद और गान्धर्ववेद है। गान्धर्व के बाद गान का उदय नहीं हुआ, अपितु सामगान में उन दोनों का ही सन्निवेश है। इसके समर्थन में उन्होंने श्रीमद्भागवत के विभूतियोग में भगवान श्रीकृष्ण की उक्ति का उल्लेख किया – 'देवर्षीणां च नारदः' तथा 'गन्धर्वाणां वित्ररथः' । आचार्य भरत की परिभाषा का भी उल्लेख किया –

यत्तु तन्त्रीकृतं प्रोक्तं नानातोद्यसमाश्रयम्।
गान्धर्वमिति तज्ज्ञेयं स्वरतालपदात्मकम् ॥

आरोह, अवरोह और अतिक्रम ये तीनों ही विधियाँ सामवेद के गान में देखी जा सकती हैं जिनका प्रयोग 'गान' में उसी प्रकार किया जाता है।

सातों स्वर भी साम के गायन और 'गान' में समान रूप से मिलते हैं। नारदीयाशिक्षा में वैदिक सामगान के सप्तस्वर के विषय में उद्धृत श्लोक इस प्रकार है –

प्रथमश्च द्वितीयश्च तृतीयोऽथ चतुर्थकः ।
मन्द्रः क्रुष्टो ह्यतिस्वार एतान् कुर्वन्ति सामगाः ॥

इसी क्रम में चेन्नई से आये हुए विद्वान् प्रो० एन० रामनाथन् ने "पूर्वरंग के विविध प्राचीन प्रकार" विषय पर प्रकाश डालते हुए पूर्वरंग के १९ अंगों एवं इन्द्रध्वज को प्राचीन परम्परा में से 'पूर्वरंग' के विकास पर विस्तृत चर्चा की। 'पूर्वरंग' की अनेक विधाओं पर चर्चा की जो नाट्यशास्त्र में प्रचलित है। यथा – यवनिका, अन्तर्यवनिका संस्थ, बहिर्यवनिका संस्थ, गीतक आदि। भरत के द्वारा कथित पूर्वरंग की परिभाषा का उल्लेख किया –

यस्माद्रङ्गे प्रयोगोऽयं पूर्वमेव प्रयुज्यते ।
तस्मादयं पूर्वरङ्गो विज्ञेयो विद्वजसत्तमाः ॥

अर्थात् रंगमंच से पूर्व जिसका विधान हो वह पूर्वरंग है। १९ अंगों में से प्रथम ९ इस प्रकार हैं – १. प्रत्याहार, २. अवतरण, ३. आरम्भ, ४. आश्रावणा, ५. वक्त्रपाणि, ६. परिघट्टना, ७. शंखोटना, ८. मार्गासारित, ९. ज्येष्ठा, मध्य और कनिष्ठ आसारिता । इन अंगों के कार्यों का अलग–अलग विस्तार से विश्लेषण कर इन्हें अन्तर्यवनिका नाम से जाना जाता है। शेष ११ इस प्रकार है जो बहिर्यवनिका के अन्तर्गत जाने जाते हैं –

१०. गीत (मद्रक के अन्तर्गत), और वर्धमान 'गान' ताण्डव नृत्य के साथ, ११. उत्थापना, १२. परिवर्तना, १३. नान्दी, १४. शुष्कावकृष्टा, १५. रङ्गद्वार, १६. चारी, १७. महाचारी, १८. त्रिक, १९. प्ररोचना ।

वक्ताक्रम में तृतीय वक्ता प्रो० ऋत्विक सान्याल ने "ध्रुपद की प्राचीन परम्परा" एवं "गान्धर्व और गान के प्रत्यय" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि गान और गन्धर्व का समवाय सम्बन्ध है। ये स्वर, ताल और पद तीनों में हो पाये जाते हैं। 'ध्रुवा' भी एक प्रत्यय है। यह कारण भी है और कार्य भी। तालमान का निर्धारण लय से होता है। 'लय' से 'छन्द' बनता है और 'छन्द' से 'ताल'। अनिबद्ध और निबद्ध 'अताल' हो सकता है।

आरोह, अवरोह स्थायी और संचारी संगीत के चार वर्ण कहे गये हैं। इस प्रकार प्रो० सान्याल ने 'ध्रुवागान विधि' से गन्धर्व और गान की उपस्थिति तथा ध्रुपद के साथ उसके सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए अपने 'ध्रुवा गायन' के द्वारा उसे मूर्त्तरूप कर दिया।

तदनन्तर एक घण्टे के भोजनावकाश के पश्चात् द्वितीय सत्र आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने की। इस सत्र के वक्ता क्रम में डा० रजनीकान्त त्रिपाठी ने "नाट्यशास्त्र में प्रतिपादित पूर्वरंग" विषय पर प्रकाश डाला। प्रो० उपेन्द्र पाण्डेय ने "नाट्यशास्त्रे प्रस्तावनायाः स्वरूपम्" विषयक अपने विचार व्यक्त किये। प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने "नाट्यशास्त्रे चित्रपूर्वरङ्गविधिः" विषयक अपने वक्तव्य में कहा कि नाट्यशास्त्र के दो भाग हैं – काव्य और संगीत तथा नाट्य काव्य के अन्दर ही माना जाता है।

तत्पश्चात् प्रो० सी० वी० चन्द्रशेखर ने स्वर्गीय प्रो० पमलता शर्मा के द्वारा किये हुए 'पूर्वरंग' के प्रयोग के अनुभव का किंचित् अंश प्रयोग के माध्यम से प्रस्तुत किया। संगीत और नृत्य में उनका साथ दे रही कलाकारों में डा० स्वरवन्दना शर्मा, लयलीना भट्ट, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संगीत विभाग की छात्राएं आदि प्रमुख थीं।

९ नवम्बर को प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो० ऋत्विक् सान्याल ने की जिसमें वक्तापक्ष से प्रथमतः नाट्यशास्त्र के प्रसिद्ध निर्देशक प्रो० कृष्णकान्त शर्मा ने कहा कि असम की पारंपरिक नाट्यरूप 'अंकिया नाट' में नाट्यशास्त्र के पूर्वरंग विधान के अनेक तत्त्व समाहित हैं। १५वीं शताब्दी के महान् आचार्य शंकरदेव एवं माधवदेव ने अंकिया नाटक तथा भावना नाट्यलेखों की रचना की। शंकरदेव ने उड़ीसा, काशी, प्रयाग, मथुरा तथा दक्षिण भारत के कई स्थानों का भ्रमण करने के बाद अंकिया नाट्यशैली का प्रवर्तन किया जिसमें नाट्यशास्त्र के समस्त तत्त्वों के साक्षात् दर्शन होते हैं। प्रो० शर्मा ने कहा कि नाट्यशास्त्र के अनुसार रंगमंच के निर्माण की विधि तथा वक्त्रपाणी, आश्रावणा, नान्दी, चारी और महाचारी, प्रस्तावना और प्ररोचना आदि अंग अपने स्वरूप में आज भी वहां द्रष्टव्य हैं। साथ ही उन्होंने अंकिया नाट और भावना में प्रदर्शित होने वाले नृत्य का सोदाहरण प्रदर्शन भी किया तथा उसके साथ संगीत, गायन, वादन, लय और ताल के पक्ष को भी प्रयोग के माध्यक से दर्शाया।

डा० स्वरवन्दना शर्मा ने "वर्तमान् पूर्वरंग प्रयोग में संगीत रचना का आधार एवं स्वरूप" विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए संगीतयोजना के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि प्रो० सी० वी० चन्द्रशेखर ने पुनः नाट्यविषयक कुछ प्रमुख संस्मरणों एवं सुझावों को प्रस्तुत किया। तदनन्तर एक छोटे से चाय हेतु अवकाश के पश्चात् इस स0 के अगले क्रम की अध्यक्षता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने की।

वक्ता क्रम में प्रो० महेश चम्पक लाल शाह ने गुजरात के लोकनाट्य 'भवाई', महाराष्ट्र के लोकनाट्य 'तमाशा' तथा राजस्थान के लोकनाट्य 'खयाल' में पूर्वरंग के नाट्यशास्त्रीय परम्परा के समाहित तथ्यों का विवरण एवं कथन प्रयोग के माध्यम से प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् एक घंटे के मध्यावकाश के उपरान्त केरल कलामंडलम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० के० जी० पौलुस ने कुडियाट्टम, कथकली और यक्षगान नाट्यरूपों में 'पूर्वरंग' के तथ्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रो० त्रिपाठी ने उत्तर भारत के कलारूप माच, नाचा, रामलीला, रासलीला आदि में विद्यमान पूर्वरंग के तत्त्वों को स्पष्ट किया।

प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी ने 'नान्दी' शब्द पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह शब्द, नगाड़ा, मंगलचारी, पुष्प उत्थापन नान्दी एवं वस्तु उत्थापन को भी 'नान्दी' कहा जाता है। **प्रमाण** – **"**लोकः वेदः तथा अध्यात्मः इति त्रीणि प्रमाणानि" इत्यादि कथनों को स्पष्ट करते हुए अपने वक्तव्य को विराम दिया।

डा० प्रणति घोषाल ने इस दो-दिवसीय संगोष्ठी पर एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया तथा अन्त में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली से आये हुए कलाकोश विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० विजय शंकर शुक्ल के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी का समापन हुआ।

– डा० रमा दुबे
सीनियर रिसर्च फेलो